

वर्ण—माला ।

हरवर्ण ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यञ्जन वर्ण ।

क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न
प फ ब भ म	य र ल व
श ष स ह	क्षत्रज्ञणष्टः

१ ऋ लृ ष. पा ङिदी भागा में काम नह पडता है।

२ उं औं ऐसे मो ङिखे जाते हैं।

३ क ख ग घ ङ ट ठ ड ढ फ के नीचे एक विलुब्ध जाते हैं वा

कमसे इतका उच्चारण... का सा हाता ह।

(२)

परिचानने के लिये आगे पीछे लिखे
इए अथवा ।

झ ट ओ ह च ए छ द फ ग ङ
ज ठ उ क र य प ज ङ ङ उ
स स् म व व इ ख ल त आ श
ध घ अ म ए ह थ अ ण
क्ष त्र ज्ञ इ न क ग सं
ज ङ ङ ङ ङ ङ ङ ।

स्वरा—मात्रा ।

आ- । इ- । ई- । उ- ।
ऊ- । ऋ- । ए- । ऐ- ।
ओ- । औ- । अं- ।

अ*

क+अ क।म्+अ=म

जल रथ डर कर अब
 फल मन घर चल जब
 तन नगर जगत लवण
 रमल कमल मरण सकल
 डर मत । रथ पर चढ़।
 घर चल छल मत कर।
 अब पढ़ । जब तक।
 पकड़ कर । कमल सर ।

• वास्तव में व्यंजनों का स्वरूप क् ख् ग् आदि है, परन्तु बिना क्लिप्ता स्वर की सहायता के उनका उच्चारण नहीं हो सकता, इस लिये उन में अ मिश्रित कर लिखते हैं जैसे कि प्रथम पृष्ठ पर क ख ग घ आदि लिखे हैं।

आ = ।

रू + आ = रा । जू + आ = जा ।

राजा वाजा आग काला पाठ

दाता माता राग माला साज

सावन चावल तालाव आदर

चादर सारस बालक लालच

बादल सावन ।

अब जा । आन ला । पाठ याद कर । माता
का आदर कर । राजा का मान कर । दाता
का दान । चावल उबाल । लालच न कर ।
बादल आया । सारन पटा ला । सातर कर ।

इ = ि ।

इ-इ इ । मु-इ-मि ।

दिन गिन पिता किरण गिरना
सिर लिख सिख हरिण फिरना

दिन निकल आया । पिता का कहा मान ।

वह कृष का शलक था । गिरना मत ।

गिन कर जा । माता का नाम बता ।

हरिण परुड़ ला ।

ई=ी

गू + ई = गी । तू + ई = ती ।

गीत खीर दही दीपक विजली

शीत तार पानी पतिल नगीना

गीत गा । दही बिछा । पानी पी । दही की

मलाई खा । विजली चमका । दीपक जला ।

पतिल का वासन ला । तार सीधा चला ।

शीत पड़ा था ।

(८)

माता पिता की सेवा का । खुत का पानी
घमेलां खिला । अहेला रुत फिर ।
पट्टत मत खल । रात पड़ गई ।
मेवा मीठा था । रात भर सेवा कर ।

ऐ=

वू+ए=वै । मू+ऐ=मै ।

बैल कैसा चैन मैना

पैर मेल नैन जैसा वैसा

दिसी से बैर मत कर । चैन में बँठ जा ।
मैले कपड़ मत पहिन । यह पृढ़ा पैल हँ ।
पैसा २ मत निवाल । मैना टड़ गई ।

जैसा काप वैसा दाम ।

नैनी करनी वैनी मग्नी ।

ओ=

गू+ओ=गो मू+ओ=मो



देखो तालाब में कैसे सुहावने कर्मल खिल
दे हैं और मंद मंद पवन के झकोले खा
रहे हैं ।

कैला सुहाना समय है । काली पटा छा रही
। पानी रो रही है । दरी दरी जल पर झीयल
खिल रही है और भांति भांति के फल कैसे मनोहर
करा देते हैं ।

हो बालकों से खेलना न पारिये । अपने
शरीरों में से धान लो कि कौन मला, और
कौन मला है । हरी का संग छोड़ के मलों से
मिल जुग रहो ।

हो बालकों ! मदा मला धान हरो, शिब से
ह तुम्हारी बर्दाई हरो । नारा रिश और सुर के
दे पर पलने से बर्दाई बर्दाई मिले । उन का धरा
रा धानो ।

नू

नू+त=न्त । मन्त । वह बड़ा सन्त है ।

नू+व=न्व । मन्वा । अपनी सन्वा सुने सुनाओ ।

नू+इ=न्द । आनन्द । मग्न करने में आनन्द होता

है ।

नू+घ=न्घ । मुग्घ । इन कृष्णों सेही मुग्घ है ।

नू+न=न्न । अन्न । मूले को अन्न दो पुन्ध्र होगा ।

नू+प=न्प । कन्पा । यह अभी तक छंगरी कन्पा है ।

नू+र=न्द । निन्द । इस गान के भाषे पर कान्ना

निन्द है ।

व

वू+इ=व । वृत्ति । मेरी वृत्ति इनमें में होगी ।

वू+व=व्व । वृषग वृषा वृषगा है, वृष वृषगाओ ।

वू+व+वम वृष वृष वृष गी है ।

वू+व+वम वृषम । वृषम गी, इस वृष वृषम

है है ।

रू

रु+र=रुद । रुद । रुदों का रुद उच्चारण वरुं ।

रु+र=रुदा । रुदिता । रुद हाथी दांत का रुदिता

एक मनोर है ।

रु+द=रुद । रुदा । रुं रुई का रुदा है ।

भू

भू+भू=भू । भू । भूयंभित भूयं पर भूयं भूयं रहे है ।

भू

भू+भू=भू । भू । भूयं भूयं भूयं भूयं का भूयं
रुदो ।

भू+भू=भू । भूयं । भूयं भूयं भूयं का
भूयं है ।

भू+भू=भू । भूयं । भूयं भूयं भूयं भूयं है ।

भू+भू=भू । भूयं । भूयं भूयं भूयं भूयं है ।
भूयं भूयं भूयं भूयं ।

म्+म=म्प । निकम्पा । हीरा निकम्पा बैठा है ।

म्+र=म्र । नम्रता । सब के साथ नम्रता से बोल

म्+ह=म्ह । कुम्हार । कुम्हार बासन बनावा ।
मोग मोल ले आवे हैं ।

२

म्+त्र=त्रे । दुर्वेन । दुर्वेन की संगत भुरी ।
भय करी ।

म्+व=वे । निर्धन । निर्धन जो दान देने
मुझदाग दी घटा होगा ।

म्+व=वे । कवे । कवे सं सुग दल ।

म्+व=वे । निवेद । निवेद को भय नयाया

म्+व=वे । निवेद । निवेद को भय नयाया
म्+व=वे । निवेद । निवेद को भय नयाया

श

श+घ=श्च । निश्चय । बिना निश्चय किये कोई वा
सुख से मत निकालो ।

श+न=शन्न । प्रश्न । तुम्हारा प्रश्न क्या है, मैंने नई
समझा ?

श+र=श्र । परिश्रम । बिना थके परिश्रम से आर्थ
है ।

श+व=श्व । ईश्वर । सारे संसार का रखने वाला
ईश्वर है, जिस को भगवान् भी कहते हैं

ष

ष+ट=ष्ट । कष्ट । बिना थके कष्ट से आती है, पान्
इस का कल बड़ा उलम है ।

ष+ट=ष्ट । कष्ट । बिना थके कष्ट से आती है, पान्
इस का कल बड़ा उलम है ।

ष+व=श्व । ईश्वर । सारे संसार का रखने वाला
ईश्वर है, जिस को भगवान् भी कहते हैं

म्+प=प्य । मनुष्य । भले मनुष्य से सब प्रेम करते हैं ।

स्

म्+व=स्व । पृस्तक । पृस्तक मैली मत करो, यह बुरी बात है ।

म्+थ=स्थ । स्थान । अपने रहने के स्थान को शुद्ध रखो, इस से जी प्रसन्न रहता है ।

म्+न=न्ध । रंघ । मद मे रंघ करो जिन से वह भी तुम मे रंघ करे ।

म्+म=मम् । मन्मथ । अपना बात मनमथ करो ।

म्+व=व्य । व्यादु । खोले खुले व्यादु है, सब ने खारे

१—माता पिता की आज्ञा के विरुद्ध कोई कार्य मत करो । आता भगिनी सब के साथ जेद से रहो । पढ़ोश्रियों को अपना बन्धु समझो । अपने देश नाशियों से निरन्तर जेद पढ़ाते रहो ।

२—बाद अवस्था में तुम को किसी बात की चिन्ता नहीं । इस लिये मन लगाकर विद्याभ्यास करो ।

३—अब पाठशाला में जाओ, गुरुओं को प्रणाम कर पुष्पक सोल पाठ स्मरण करो । अन्य बाटकों के साथ जूया समय मत गंवाओ, समय का जूया खोना पाप है ।

४—यदि तुम किसी की निन्दा न करोगे और सब से नीट रचन बाल्याग, तो कोई तुम्हारा ध्याचिन्त शत्रु न होगा और सब दित्र रहेंगे, इस से तुम्हारे घर कार्य विरह होंगे ।

१ पाठ ।

गले वह बालक है, जो अपना पाठ कण्ठ का
 फे गुब्बारी को सुना देते हैं । यह बालक धन्य है
 जो माता पिता की आज्ञा मानते हैं । बालको !
 माता पिता तथा भाई पन्थुओं की कभी अवज्ञा न
 करो, सब के अधीन और आज्ञाकारी बने रहो ।

२य पाठ ।

झानी बालक गर्व नहीं करते हैं, मूर्ख अपने
 आप को सदा मानते हैं । विद्या अनोलक धन है,
 और कमोल मिलता है, इतने के लोभ में पतन करो ।
 भले बालक सदैव विद्या का अभ्यास करते हैं,
 और दुर्लभ ज्ञान के लोभ नहीं छोड़ें, नरक गुण
 को विद्या हीनता (२१)

३य पाठ ।

जो बालक सदा विद्या का अभ्यास करते हैं,
 वे ही सदा सफल होते हैं, नरक हीनता (२१)

और परलोक में उत्तम गति प्राप्त होगी । युवा अवस्था में बड़ी कर्म करने उचित हैं, जिन से बुढ़ापे में सुख हो, और आयु बढ़ काम करने उचित हैं, जिन से परलोक धरे ।

४थ पाठ ।

मले बालक सची कोमल प्यारी और सब से हितकारी बात कहते हैं । झूठी कड़ी और बुरी बात कर्मा नहीं कहते । अपने मुंह से अपना त्रुटि, और पराई निन्दा नहीं करते । जो बालक अपने मन में कुछ और रखते हैं और बाहर से कुछ और कहते हैं, वह अच्छे नहीं, वह भी एक प्रकार के चोर हैं ।

५म पाठ ।

कुतम न बनो, कुतम होना बहुत बुरा है । जो बालक किसी के किये हुए उरकार को

भूल बैठते हैं, लोग उन्हें कुतम कहते हैं । कुतम का इस लोक में यश नहीं और परलोक में भी मला नहीं, इस लिये तुम्हें उचित है कि किसी के उपकार को कभी न भूलो, कुतम बने रहो, जिस से यहां यश और परलोक में सुगति हो ।

दुठा पाठ ।

हे बालको ! शुद्धिमान् की संगति से ज्ञान और मान मिलता है । जो बालक ज्ञान में लड़ते मगहते माली बंते और दगा काते हैं, वे कुतम भी बने हैं । मित्र दुःख को नश्य पहचाना जाता है । मित्र का धान पान अच्छा है, उन के मित्र बहुत है । दुःख मित्र व अदरा अन्य उपदेश को नश्य है । किसी है निन्द्य मत छोडो

७म पाठ ।

मूर्ख की यह बड़ी पहचान है कि वह बिना पूछे बोल उठता है । दुष्ट लोगों के पास बैठने से अकेले बैठ रहना अच्छा है । स्नान करने से शरीर शुद्ध होता है । माता पिता को अपने सिर पर छत्र समझो, क्योंकि उन के होने से अब तुम निश्चिन्त हो । यदि कोई पुत्र तुम्हारे यहाँ पाहुना आवे उस का उच्चम रीति से सत्कार करो । अपनी जिह्वा को सब समय अपने बंध में रखो । बालकों को धादिये कि बहुत परिभ्रम कर के विद्या सीखें, जिस से सब स्थान पर मान पावें ।

८वां पाठ ।

उपदेश ।

१—पराई सभा में विचार कर बात कही नहीं तो मुख बंद रखो । ऐसा न हो कि लोभ

तुम्हें यह कहने ठम कायं—'मुंह छोटा बात बड़ी' ।

२—पराए द्रव्य का लोभ मत करो, चोरी और गाली देना छोड़ दो । मनुष्य में ये अवगुण कभी न होने चाहिये ।

३—परमेश्वर से डरो, और उसकी स्तुति करो और उसका प्रेम हृदय में धरो, क्योंकि परमेश्वर का घर सुर सन्धि का घर है, उस की प्रीति सब डेड़ों के मिटाने वाली है ।

९वां पाठ ।

लोभ करना ही तो विशेष बुरे विषय था
 करो । अपनी प्राणि प्राणी है हां किन्ती
 का दुःख न करो । मर्दान्ति धारों के शस्त्र में सिद्ध
 न होना, क्योंकि सर्वत्र विनाश पर नहीं चिन्त की
 शक्ति धारों के धर्म में के विनाश न हटाई ।

सब से प्यारी वस्तु हूँ तो ईश्वर है । इस से बढ़ कर और क्या प्यारा हो सकता है । यदि उच्चम से उच्चम संगी चाहो तो धन है ।

बहुत सोना बहुत व्यर्थ फिरना चपल बालकों का काम है । अपनी बड़ाई और पराई निन्दा त्यागो, जिस से जगत में मान पावो ।

१०वां पाठ ।

उच्चम उपदेश ।

एक बालक अचेत लेटा पड़ा था, दो पक्षी आपस में लड़ते २ उसकी छाती पर आन गिरे, उन दोनों में से एक उस के हाथ आ गया और दूसरा उड़ गया । उड़ गए को देख उन पकड़े गए पक्षी ने कहा ' हे शत्रुक ! तू मझे परमेश्वर

के लिये छोड़ दो, मेरे पचे पीछे तो रहे होंगे ।
बालक ने उस की बात पर कुछ प्यान न दिया ।
तब पक्षी बोला—मैं तुम्हें चार अमोलक दाते
बठाता हूँ, जो मेरे टके भर मांस से कई गुणा
अधिक तुम्हें लाभकारी होंगी ।

१म—राध आई बहुत ही कभी न छोड़ना ।

२म—जो दाते मन्त्र में न आये उन पर
बिश्वास न बांध लेना ।

३—बीड कई बात पर नहीं बहाना । हमने
कहा—पौड़ी बात ! पक्षी बोला, तुम्हें छोड़ो तो
पौड़ी बात बहाना । बालक छोड़ कर बोला—अब तो
बस । पक्षी बोला तुम्हें नहीं बहाना नू अति बुरे
हैं वे । पक्षी बोला नू नू नू नू नू नू नू नू नू नू नू

बर्हने में काया, मैंने जो कहा था, हाथ
को नहीं छोड़ना, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।

११वां पाठ

शिक्षा ।

होम निरादर की कुंजी है । अपने
की रक्षा कर । सुनने और देखने में बढ़ा मे
मनुष्य कामों से पहिचाना जाता है । उधार भी
बिगाड़ता है । जगत में कोई मनुष्य पूर्ण
नहीं । निर्धन पण्डित मूर्ख बनी से अग
मूर्ख मित्र से सुदिमान शत्रु अच्छा है । थोड़ा
बहुत रोगों से बचाता है । मला बढ़ है, जि
होगों को लाभ पहुंचे । जो किसी को ईसता
सब ईसते हैं, जो दूसरों के दोष सुनाता है ब
होपी है । जो परमेश्वर ने दृम का दिया है
को ही । अपनी बढ़ाई अपने मुँह में न क

दूसरों के मुख से अपनी बदार्द सुन कर प्रसन्न
भी न हो ।

द्वर्थक शब्दों का पाठ ।

मैं तो हार परोते २ हार गई । डूबे को देख
हरन हरन हो गए । चील पर चील बैठी बोलती है ।
समाधि पर समाधि क्यों लगा बैठे हो । मलमल
के वस्त्र से मल मल के मैल निकाल टाठ । इध का
घुंटा पिला कर अब गला तो न घुंटा । इस तार ने
अंगरेजों को तार ही दिया । घड़ी को घड़ी में
एक घड़ी भर रख छोड़ ।

दोहा ।

खोना देने पिय गए, सुना कर गए देश ।

सेनि मिठा न पिय किये, रूपा हो गए देश ॥

कल पर रखना ।

श्लोका ।

१—जिसी माता ने पुत्र को कहा बेटा नाम

का द्वार बंद कर आओ' । उचर दिया 'मां जी, पोंड़ा ठहर के बंद कर लेता हूं' । इतना कहते २ सो गया । जब उठ कर द्वार बंद करने गया, तो देखा कि शूकों ने सब पाँदे नष्ट कर दिये थे ।

२—दूसरे दिन मां ने कहा 'पुत्र पाठ मली मांति स्मरण रत, कळ को पगीसा होने वाली है, सो विद्यार्थी अष्टा मुनापंगे, उनको पारितोषिक मिठेगा' । उचर दिया—'कनकीसा उड़ा कर स्मरण करूंगा' । जब खरकत पाठ पाद करने लगा, सोन हो गई सोटी स्याते ही नींद आ गई, सोते सोते दिन चढ़ गया, जब मुनाने रगा, तो हूट भी स्मरण नहीं था, पारितोषिक म बचिन रह गया ।

स्त्री-शिक्षा ।

स्त्रियों को भी पुरुषों की भांति विद्या सीखना उचित है । हिंदू धर्म के अनुसार स्त्री पुरुष धर्म कर्मों में एक समझे गए हैं, और धर्म कर्मों की परीक्षा विना शिक्षा के नहीं होती । इस लिये स्त्रियों अथवा स्त्रियाँ को उचित है कि वे अवश्य विद्या पढ़ें, और उस के द्वारा अपने धर्म कर्म, जिन से लोक सुखे अवश्य मन देकर सीखें ।

हिंदी ।

हे पाठको, तुम जानते हो कि इस देश का नाम भारत अथवा हिंदुस्तान है, इसी से इस देश की भाषा को हिंदी भाषा कहते हैं ।

यह भाषा कई प्रकार की है । जैसे बंगाल की बंगाली हिंदी, गुजरात की गुजराती हिंदी, महा-

संख्या वाचक शब्दों के नाम और स्वरूप ।

१ एक	१५ पन्द्रा
२ दो	१६ सोलह
३ तीन	१७ सत्रह
४ चार	१८ अठारह
५ पाँच	१९ उन्नीस
६ छः	२० बीस
७ सात	२१ इक्कीस
८ आठ	२२ बारस
९ नौ	२३ तेरस
१० दस	२४ चौबीस
११ ग्यारह	२५ पचास
१२ बारह	२६ छन्नीस
१३ तेरह	२७ सप्तसत्रस
१४ चौदह	२८ अष्टासत्र

२९ उन्तीस	४७ सैंतालीस
३० तीस	४८ अड़तालीस
३१ इकतीस	४९ उनचाम
३२ बचीस	५० बचास
३३ सेतीस	५१ इकपावन (इकधंजा)
३४ चौतीस	५२ बावन (बधंजा)
३५ पैंतीस	५३ त्रेपन (त्रधंजा)
३६ छचीस	५४ चव्वन (चौरंजा)
३७ सैंतीस	५५ पचपन (पचधंजा)
३८ अड़तीस	५६ छप्पन (छधंजा)
३९ उन्तालीस	५७ सतावन (सतधंजा)
४० चालीस	५८ अट्ठावन (अटधंजा)
४१ इकतालीस	५९ उनासठ
४२ बिया (बिता) लीस	६० साठ
४३ तिया (तिता) लीस	६१ इकसठ
४४ चरा (चोता) लीस	६२ बासठ
४५ पैंतालीस	६३ त्रेसठ
४६ छिया (छिता) लीस	६४ चौसठ

६५ पैसठ	८३ त्रियासी
६६ छियामठ	८४ चौरासी
६७ सड़सठ	८५ पचासी
६८ अड़सठ	८६ छियासी
६९ उन्हत्तर	८७ सतासी
७० सत्तर	८८ अठासी
७१ इकहत्तर	८९ उनानवे (नवासी)
७२ बहत्तर	९० नव्वे
७३ तिहत्तर	९१ इक्यानवे
७४ चौहत्तर	९२ बानवे
७५ पचहत्तर	९३ त्रानवे
७६ छिहत्तर	९४ चौरानवे
७७ सतत्तर	९५ पचानवे
७८ अठत्तर	९६ छियानवे
७९ उनासी	९७ सतानवे
८० अस्सी	९८ अठानवे
८१ इक्यासी	९९ निन्यानवे
८२ बयासी	१०० सौ

Printed at the MESSAGE AND PRESS, LONDON
By L. MOTT MAW, MANAGER.



श्रीबीतरागायनमः ।

जैन वालोपदेश ।

कैमस्तुति एव मानवः कृष्ण महाराज एव

कैम-वालोपदेश के उपदेश



सहायक -

माला नौगनागन किमनामलजी

काय कन्द (विद्यालय परिषदा)



वि. सं. १९२४—१९२५

मद्रास १९२५

एतुकेएतत्त त्रिगिट्ठ वक्ष्मं धाहंर मे मुद्रित ॥

श्री ह्रीं नमः ।

* वर्णा-माला *

* स्वर *

स	श्र	श्रा	श्र	श्र
ल	उ	ऊ	ऋ	ॠ
प्र	व	ओ	औ	अ

वसुंधरत्रिपिटकस्य भाष्यं आहारे मे मुद्रितम् ॥

त थ द ध न
 प फ ब भ म
 य र ल व
 श ष स ह

व्यंजनों की पहचान ।

श ल ग ह छ ज ठ ट ढ
 ड स व व ज झ ङ क प
 भ म श झ य ज स न

नोट-कोई कोई च अ झ को भी व्यंजन कहने से परहे दो।
 दो अक्षरों के मिलने से यंत्र है इस लिए यह मिले हुए अक्षरों
 के साथ लिखे जावेंगे ।

* य का दूसरा रूप 'श' ऐसा भी होता है ।



ऊपर लिखे अक्षरों में से दो अक्षरों का जोड़

म + क = मक

अ + ब = अब

क + व = कव

न + द = नद

ध + म = धम

क + र = कर

ध + र = धर

न + र = नर

र + म = रम

म + त = मत

आ + ग = आग

म + ब = मब

न + म = नम

न + ग + र = नगर

न + ह + र = नहर

न + द + र = नदर

न + क + र = नकर

न + म + र = नमर

न + ब + र = नबर

र + य = रय

उ + स = उस

क + ख = कख

ल + त = लत

प + क = पक

पे + व = पेव

ओ + स = ओस

औ + र = और

अं + ग = अंग

ख + ल = खल

ह + ल = हल

व + ल = वल

ब + ह = बह

तीन अक्षरों का जोड़ ।

ग + म + न = गमन

क + र + व = करव

क + ल + न = कलन

ल + ग + न = लगन

म + ह + ल = महल

म + न + र = मगर

वाराक्षरी ।

स्वर चिन्हों के संयोग से व्यञ्जनों के बने हुये रूप ।

क का कि की कु कू*के के को कौ कं कः
 ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
 ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
 घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः
 ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः
 च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः
 छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः
 ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
 झ झा झि झी झु झू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः
 ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञं ञः
 ट टा टि टी टु टू टे टे टो टौ टं टः
 ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
 ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः

व्यञ्जन + माप स्वर का चिन्ह न लगाने से क-सू=कु, झार क अ-रे यह बहुत प्रसिद्ध न होने से नहीं दिया गया ।

ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
 व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
 श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः
 प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
 त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
 ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

स्वर चिन्ह सहित व्यंजनों का शब्दों में प्रयोग ।

ल = ल = ली = लाली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

ली = ली = ली = लीली

अभ्यास ।

सेवक किंकर चाकर नौकर केवल आराम
 वियोग जननी मुनि शरीर अपनी बहूत
 मेरुट देहली आगरा मूरत परमानंद
 भगवान शांतिनाथ विमलनाथ सुमतिनाथ
 अजितनाथ कंगाल गिलोना हंसी वेरागी
 गोरख धंधा भागत भूट पढ़ना मीठा दूध

छात्र छात्रे शरण ।

किमी जीव को मन मारो । दया भाव रखो ।
 गुरु की सेवा करो । जो पुरुष गुरु की सेवा
 करते हैं उनको संसार में बड़ा सुख मिलना
 है । हमेशा सच बोलो । छूट कर्मी मन कहो ।
 किसी जीव को दुःख देना पाप है । अपना
 पाप हर रोज़ याद किया करो । आज का
 काम कल पर मत छोड़ो । किसी से थोका

यहाँ करना चाहिये । अपने से बड़ों का मान
 करो । दुखी पुरुषों की सहायता करो । भले
 कामों का भला और बुरे कामों का बुरा फल
 होता है । बालको ! पाठशाला में ठीक समय
 पर जाया करो । साथियों के साथ लड़ना
 भगड़ना नहीं चाहिये ।

पड़ोसियों से मेल रग्वो । सबको अपने भाई
 बंधु के बराबर समझो । किसी को मत
 सताओ । सब की आप जैसी जान है ।
 सब से भलाई करो । बालको ! अपने माना

पाई वाले जैसे:—

प म ज व च स

बिना पाई वाले जैसे:—

द क ट ठ ड ढ

जब बिना पाई वाले अक्षर अगले उ से मिलते हैं तब उनकी पहली सूरत कुछ बनी रहती है । जैसे:—

ट + ठ = ट्ठ

ड + ड = ड्ढ

ढ + क = ङ्क

द + द = द्द

जब बिना पाई वाले अक्षर 'य' से मिलते हैं तब 'य' की सूरत 'य' बन जाती है । जैसे:—

द + य = द्य

क + य = क्य

ठ + य = थ्य

ल् + य = ल्य—कल्याण	ग् - ध = ग्ध—दुग्ध
र् + थ = र्थ—भाषार्थ	ग् - न = न्न—अग्नि
न् + क = स्क्—संस्कार	च् + च = च्च—सञ्चा
प् + ण = ण्ण कृष्ण	ज् - ज = ज्ञ—जज्ञा
ञ् + च = च्च—पञ्चाळ	ज् - व = ज्व—ज्वर
म् + य = म्य—यम्यई	ङ् + ट = ङ्ठ—बुङ्ठा
र-द-ध = र + द्ध = र्द्ध—वर्द्धमान	न् + क = न्क—सत्कार
ग् - व = ग्व—पाश्वनाथ	ङ् - व = ङ्ठ—ढेप
श् + ल = श्ल—मल्लिनाथ	न् + न = न्न—अन्न
न् - थ = न्थ—कुन्थुनाथ	न् + य = न्य—कन्या
न + न = न्न—शान्ति नाथ	न - ट = न्ठ—चिन्ट
प . प = प्य—पुष्पटंन	प + त = प्त—वृप्ति
द . म = द्म—पद्म मधु	प + य = प्य—प्यान
द . व = द्व—विशाद्वय	म + न = म्न—निम्न
म . व = म्व—मरुन्वती	न . व = न्व—आश्रम
र + र = र्र—रज्ञा	र + र = र्र—राम
र - य = र्य—अभ्यासक	र - र = र्र—राम
र - र = र्र—चक्र	र - र = र्र—राम
व . य = व्य—व्याधि	र + र = र्र—राम
व . ल = व्ल—वेपथु	ध - र = ध्र—धरणी

अहिंसा ।

बाळको ! किसी भी जीव को तुम मत मारो किसी को दुःख मत दो ऐसा करना बड़ा पाप है । जब तुम किसी पुरुष स्त्री गाय घोड़ा कुत्ता माँप बिच्छू आदि को मारोगे तो वह भी तुम को मारने दीढ़ेंगे और तुम्हें दुःख देंगे । इस लिये अगर तुम किसी से शांति पाना नहीं चाहते तो तुम भी उनको मत मारो । जान सब में एक ही होती है ज़मीन पर चलने फिरने लों गेंटे अंतुओं की भली पकाय रक्षा करो । उनके शत्रुओं का हाथ के नीचे मत समझो क्योंकि ऐसे करने से वे मरजाते हैं । भला, कहां, अगर तुम के शत्रुओं मरने शत्रुओं के नीचे समझ टांछे तो तुम के कितना दुःख होगा इसी तरह तुम भी किसी को जमीन आदि पर मत समझो जैसे तुम शत्रुओं के शत्रुओं के नीचे दूध कर दुःख पाना नहीं चाहते इसी तरह ज़मीन पर चलने फिरने जैव भी तुम्हारे हाथ शत्रुओं के नीचे मारकर कष्ट उठाना नहीं चाहते । सब को अपने जैसे समझो । सब पर दया करो । सब में प्रेम करो ।

झूठ बोलना ।

झूठ बोलने वाले का सब जगह अनादर होता है ।
 सच आदमी कभी सच भी बोलता है तो उस के
 सब को भी लोग झूठ ही समझते हैं । रात दिन उस
 को यही सोच लगा रहता है कि कहीं मेरा झूठ खुल
 न जाय फिर उस को झूठ छिपाने के लिये बहुत सी
 और झूठी बातें बनानी पड़ती हैं । झूठे की सब जगह
 निन्दा होती है । इस से बचने के लिये झूठ कभी न
 बोलना चाहिये जो तुम सच बोलोगे तो सब के प्यार
 बने रहोगे और सब लोग तुम्हारा विश्वास करेंगे । सच
 बोलने से तुम जगत में बड़ाई पाओगे, इस लिये, लड़कों!
 तुम को चाहिये कि सदा सच बोलो और झूठ का नाम
 भी न लो । झूठ का संग भी मत करो झूठ बोलना
 बहुत ही बुरा है इस का बड़ा ख़ांटा फल मिलता है ॥

एक समय की बात है कि जगह में चलने चलते
 किसी जंतु के पाओं में कांटा धुस गया । और न चल
 सकने के कारण वह पृथ्वी पर हा लेंट गया । कुछ
 समय के पीछे उमी रास्ते में एक जानवर आ निकला

ऊंट ने उस वानर से कहा, कि हे भाई वानर !
 पाभों में कांटा घुस गया है यदि तुम निकाल दो
 बड़ा उपकार होगा । वानर ने उत्तर दिया कि हे मित्र !
 कांटा तो मैं निकाल सकता हूँ किन्तु तू मुझे क्या इनाम
 देगा । इस पर ऊंट ने फिर कहा कि, भाई ! मेरे पास
 इस समय कोई ऐसी वस्तु नहीं है, इस लिये तुझे क्या
 दूँ किन्तु तेरा उपकार अवश्य मानूँगा । वानर ने कहा
 कि अच्छा, यदि तू अपने पास का एक ग्राम देना संजो
 करे तो तेरा कांटा अभी निकाल देता हूँ । वानर ने
 ने स्वीकार हो कर मान लिया । और वानर ने भी
 तौक्षणियों में कांटा निकाल दाखा । कांटे के साथ
 निकलने ही ऊंट छट छट कर लड़ा हो गया और
 वन में हो कर वानर से बोला कि तू मेरा कांटा
 निकाले किन्तु वानर ने उत्तर दिया कि मित्र ! तू
 इस समय मेरी भावश्यकता नहीं है फिर कभी
 संजो देगा । वानर पीछे चला होकर उलझना न करना
 बर्बाद हो गया । जाने जाने उस का एक गीत
 बोल गया और उसने उसका ही से देखा कि
 कि भाग्य बड़ा काल है जो तुम इनके वन में हो ।

वर ने कहा कि, हे गीदड़! आज मैंने एक जंठ का कां-
 थ निकाला है जिस के इनाम में मैं उसके मांस का
 एक ग्रास लूंगा। तब गीदड़ बोला, अरे मूर्ख वानर!
 तुमने बहुत बुरा किया क्योंकि यदि वह मर जाता तो
 उसका सारा शरीर ही हमारे खाने में आता, अच्छा,
 वृंकि अभी तुने मांस लिया नहीं इस लिये जिह्वा का
 मांस मांगना. वानर बोला, मैंने जिह्वा का मांस तो
 उससे नहीं किया तब गीदड़ ने उत्तर दिया कि मैं
 तेरा साक्षि रहा ऐसे निश्चय करके दोनों ही जंठ के
 समीप आए। तब वानर ने जंठ से जिह्वा का मांस
 मांगा तब जंठ ने कहा, कि, हे भाई वानर! मैंने तेरे
 से जिह्वा का मांस तो नहीं किया अभी समय ऋगाळ
 (गीदड़) जंचे स्वर में कहने लगा, कि, हे महा
 शरीर धारी ! जब तू दुर्बल था तब तू ने मेरे मांसने ही
 तो जिह्वा का मांस देने का कहा था अब तू इत बड़बुता
 है। तिस पर जंठ बैठ गया जिह्वा का महाव क. मुख
 खोल दिया और वानर से बाल 'मान लें' मन्तु
 वानर का मुख म्भ्रुअ अर गोल होने क कारण जंठ
 के मुख में प्रवेश न हो सका कि गीदड़ कहने लगा

प्र०-त्याग किसे कहते हैं ?

उ०-दान करना, अभयदानादि का देना ।

प्र०-ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या है ?

उ०-कुशल अनुष्ठान का सेवन करना और शास्त्र पढ़ना,
मैथुन से निवृत्ति करना ।

प्र०-इनका क्या फल है ?

उ०-संसार में मान और मोक्ष का सुख

प्र०-मोक्ष किसे कहते हैं ?

उ०-जहां पर कोई भी दुःख न हो

प्र०-मोक्ष आत्मायें सर्वज्ञ हैं किन्वा अल्पज्ञ ?

उ०-मोक्ष आत्मायें सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हैं ।

प्र०-व्रताओ पुष्प कितने प्रकार के होते हैं ?

उ०-चार प्रकार के

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-१ एक पुष्प सुंदर तो होते हैं किन्तु सुगंध से रहित होते हैं, २ एक सुगंध से भरे होते हैं अपितु रूप से वर्जित होते हैं, ३ एक सुगंध और सुंदरता से पूर्ण होते हैं, ४ एक सुगंध और सुंदरता दोनों से ही रहित होते हैं ।

प्र०-इन पुष्पों से क्या शिक्षा मिलनी है ?

घ०- जो जीव स्वभाव से भद्र और विनयवान् दयालु तथा किसी दूसरे की ईर्ष्या न करने वाले हैं वे मरकर परमपरम गति में जाते हैं उसे ही मनुष्य गति कहते हैं ।

प्र०-देवगति किसे कहते हैं ?

उ०-जो जीव अन्यन्न शुभ कर्म करने वाले हैं वे मरकर देवता बन जाते हैं उसे ही देव गति कहते हैं ।

प्र०-ज्ञानि किसे कहते हैं ?

उ०-जिस में जीव का जन्म होवे और उस जन्म तक उसी ज्ञानि में रहे ।

प्र०-ज्ञानि कितनी हैं ?

उ०-पाँच ।

प्र०-वे कौन २ मी हैं ?

उ०-एकेन्द्रिय ज्ञानि १ द्वीन्द्रिय ज्ञानि २ त्रीन्द्रिय ज्ञानि ३ चतुरिन्द्रिय ज्ञानि ४ पंचेन्द्रिय ज्ञानि ५ ।

प्र०-एकेन्द्रिय ज्ञानि किसे कहते हैं ?

उ०-जिस प्राण के एक ही मर्त इन्द्रिय हो जैसे-मिट्टी १ पानी २, अग्नि ३, वायु ४, वनस्पति ५ ।

प्र०-दो इन्द्रिय वाले प्राण कौन २ मी हैं ?

उ०-जिस प्राण के दो ही इन्द्रिय हों जैसे-मर्त और

प्र०-वे कौनसी हैं ?

उ०-पृथिवीकाय, अप्काय, तेजोकाय, वायुकाय, स्पति काय और श्रसकाय ।

प्र०-इनका अर्थ बतलाओ ?

उ०-पृथिवीकाय (मिट्टी के जीव) अप्काय [पानी के जीव] तेजोकाय [अग्नि के जीव] वायुकाय [पवन हवा के जीव] वनस्पतिकाय [सपत्नी के जीव और श्रसकाय [दिसने घसने दो इन्द्रिय भाग के जीव ।]

प्र०-इन्द्रिय कितनी हैं ?

उ०-पाँच ।

प्र०-वे कौन २ सी हैं ?

उ०-ज्ञान, अस्ति, नामिका, शिद्ध, मन्वा ।

प्र०-वर्दान किसे करने हैं ?

उ०-ब्रह्मा वस्तु सृष्टुं हो जाये ।

प्र०-वर्दान कितने हैं ?

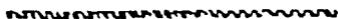
उ०-छ (५) ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

६०—आहार पर्याप्त [पूरा आहार] शरारि पर्याप्त [संपूर्ण शरीर] इन्द्रिय पर्याप्त [संपूर्ण इन्द्रिय] श्वासोश्वास पर्याप्त [संपूर्ण श्वासोश्वास] भाषा पर्याप्त [संपूर्ण भाषा] मनो पर्याप्त [संपूर्ण मन] यही छै पर्याप्त गर्भ में ही जीव पूर्ण कर लेता है ।

प्रश्नावली ।

- १—चारों गतियों के नाम बताओ ?
- २—दो कार्यों के नाम कहो ?
- ३—जाति किसे कहते हैं ?
- ४—पांचों इन्द्रियों के नाम बताओ ?
- ५—मक्खी में कौन २ सौ इन्द्रिय हैं उनके नाम खो ?
- ६—दो इन्द्रिय वाले जीव कौन २ से हैं ?
- ७—पशु गति में प्रायः कौन जीव जाते हैं ?
- ८—मनुष्य गति में कौन से जीव जाते हैं ?
- ९—जुँ कितनी इन्द्रियों वाला जीव है ?
- १०—जोक में कितनी इन्द्रिय हैं ?
- ११—अणुकाय का क्या अर्थ है ?



४०-सत्य मनोयोग १ असत्यमनोयोग २ मिथ्र मनोयोग
३ व्यवहार मनोयोग ४ सत्य भाषा ५ असत्य
भाषा ६ मिथ्र भाषा ७ व्यवहार भाषा ८ औदा-
रिक ९ औदारिक मिथ्र १० वैक्रियक ११ वैक्रिय
मिथ्र १२ आहारिक १३ आहारिक मिथ्र १४
कार्मण १५ ।

प्र०-उपयोग किसे कहते हैं ?

उ०-ज्ञानादि में आत्मा का उपयुक्त होना

प्र०-उपयोग कितने हैं ?

उ०-बारह १२ ।

प्र०-उनके नाम बताओ !

उ०-पांच ज्ञान, तीनों अज्ञान, चार दर्शन हैं--जैसे कि
मनिज्ञान १, धुनज्ञान २, अबधिज्ञान ३, मनपर्यव
ज्ञान ४, केवलज्ञान ५, मति अज्ञान ६, अज्ञान
७, विभंग ज्ञान ८, बहुदर्शन ९, अचक्षुर्दर्शन
१०, अबधि दर्शन ११, केवल ज्ञान १२ ।

प्र०-कर्म किसे कहते हैं ?

उ०-जो हिंस्र जाण तथा अज्ञाना क मय मूल
परमाणुओं का सम्बन्ध हो जाना ।

१०-आहुतियों किसे कहते हैं ?

२०-विष्णु करने से होने वाली आहुतियों को यज्ञिक कहते हैं तथा ब्रह्म, विष्णु, रुद्र और देवता की आहुतियों को वैष्णव कहते हैं।

३०-यज्ञिक करने किसे कहते हैं ?

४०-विष्णु करने से होने वाले यज्ञ और यज्ञिक करने को वैष्णव कहते हैं।

५०-वैष्णव करने किसे कहते हैं ?

६०-विष्णु करने से होने वाले यज्ञिक को वैष्णव कहते हैं।

७०-ब्रह्म का यज्ञ ब्रह्मण्य और विष्णु के यज्ञिक को यज्ञिक कहते हैं।

८०-वैष्णव करने का।

९०-वैष्णव करने का दूसरा नाम यज्ञिक है ?

१००-विष्णु करने का यज्ञिक।

पांचवां पाठ.

भली वाणी ।

प्र०—बालको ! तुम्हें माता पिता और बड़ों के साथ कैसे बोलना चाहिए ?

उ०—हमें माता पिता और बड़ों के साथ “ जी ” करके बोलना चाहिए ।

प्र०—छोटे भाई और बहनों के साथ किस तरह बोलना चाहिये ।

उ०—उनके साथ प्यार से मीठा वचन बोलना चाहिये ।

प्र०—मीठा बोलने से क्या लाभ है ?

उ०—मीठा बोलने से माता पिता और बड़े लोग प्यार करते हैं मित्र आदर करते हैं ।

प्र०—बुरे बालक कौन हैं ?

उ०—जो गालियां निकाळंत हैं वह बुरे बालक होते हैं ।

प्र०—गाली देने से क्या बुराई है ?

धरम के सामने सब हेच, राज और पाट दुनियां का ।
 धरम ही सार है जग में, धरम सब से अमोलक है ॥२॥
 धरम के वास्ते सीता किया परवेश अगनी में ।
 राम तज राज बन पहुंचे, धरम सब से अमोलक है ॥३॥
 धरम के वास्ते गर जान भी जाए तो दे दीजे ।
 नमस लीजे यकीं कीजे, धरम सब से अमोलक है ॥४॥

भजन ३

हाथ ने कलजुग के दामन को छुड़ाना चाहिये ।
 धरम में जिनराज के मन का लगाना चाहिये—टेक
 भाई भाई में नहीं झगड़ा उठाना चाहिये ।
 लड़ झगड़ करके अदालत में न जाना चाहिये ॥ १ ॥
 बाप मां को गालियां देते हो करने हो गजब ।
 धरम का भी तो तुम्हें कुछ खौफ खाना चाहिये ॥ २ ॥
 पद करमे को छोड़ कर, शतरंज जुवा खेळते ।
 इस नमस पे आपके आंसू बहाना चाहिये ॥ ३ ॥
 रंडी भट्टवों को नचाकर, किम लिये खोने हो धन ।
 व्यर्थ व्यय को छोड़ कर, कालिज बनाना चाहिये ॥२॥
 न्यायन कलयुग चला आता है जल्दी ने हमें ।
 माना पिता गुरु देव की, सेवा भी करनी चाहिये ॥ ४ ॥

•

•

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

जैन धर्म शिक्षावली ।

तीसरा भाग

लेखक

उपाध्याय जैनमुनि आत्मारामजी

महाराज

—
प्रकाशक—

शिवप्रसाद अमरनाथ जैन

अम्बाला शहर ।

—
एडुकेणल मिण्टिड्र वरुस, बरदौर ।

—
करनिक सं० १९७८ वि०

श्रीजैनधर्म की जय !

श्रीमहावीर स्वामी की जय !

* जैनधर्म शिक्षावली *

* तीसरा भाग *

प्रथम पाठ ।

सूत्रों के विषय ।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।

मिच्ची मे सव्व भूणसु, वेरं मज्झं न केणई ॥१॥

अर्थ—[खामेमि] मैं क्षमापण करना हूँ, [सव्वे] सर्व [जीवा] जीवों को [सव्वे] हे सब [जीवा] जीवों ! [खमंतु मे] मेरे पर भी तुम क्षमा करो, क्योंकि [मिच्ची] मैत्री भाव है [मे] मेरा [मज्झ] मध्य [भूणसु] जीवों में अपितु [वेरं] वैर भाव [मज्झं] मध्य [केणई] न केणई किन्हीं जीव के साथ भी नहीं है ।

भावार्थ—यं सब जीवों में समा की प्रार्थना करना है और, हे सब जीवों ! तुम भी मेरे पर समा करो, क्योंकि मेरी मित्रता सब जीवों से है, किन्तु मेरा वैर भाव किसी भी जीव के साथ नहीं है ।

प्रश्न-यह सुन्दर पाठ किस स्थान का है ?

उत्तर-जैन सूत्रों का ।

प्र०-कौन से जैन सूत्र में यह पाठ आया है ?

उ०-आवश्यक सूत्र में ।

प्र०-आवश्यक सूत्र का क्या अर्थ है ?

उ०--जिस सूत्र के पाठ अवश्यमेव पढ़े जाएं अर्थात् जिन पाठों को साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका दोनों समय अवश्य पढ़ते हैं ।

प्र०-आवश्यक सूत्र के सारे कितने अध्याय हैं ?

उ०-छे ६ ।

प्र०-उनके नाम क्या २ हैं ?

उ०--१ सामायिक, २ चतुर्विंशति, ३ वन्दना, ४ पतिकण, ५ कायोन्मर्ग और ६ मन्याख्यान ।

प्र०-जैन सूत्र कितने हैं ?

उ०-भाज कल वर्तीम जैन

प्र०—क्या जैनी बत्तीस ही जैन सूत्र मानते हैं ?

उ०—प्रामाणिक बत्तीस ही जैन सूत्र माने जाते हैं किन्तु जो और सूत्र वा ग्रन्थ हैं उनके पाठ जो २ बत्तीस सूत्रों से प्रतिकूल नहीं हैं, वह भी मानने योग्य हैं।

प्र०—बत्तीस सूत्र ही क्यों प्रामाणिक हैं और क्यों नहीं ?

उ०—यह सूत्र आप्त प्रणीत (सर्वज्ञोक्त) हैं परस्पर विरुद्ध भावों के उपदेष्टा नहीं हैं इन में यथार्थ और बुद्धि संयुक्त भावों का विस्तार पूर्वक कथन किया गया है, अपितु इतना ही नहीं किन्तु युक्ति संगत कथन हैं।

प्र०—बत्तीस सूत्र किस प्रकार से गिने जाते हैं ?

उ०—अंग सूत्र, उपाङ्ग सूत्र, मूल सूत्र, छेद सूत्र, और आचर्यक सूत्र।

प्र०—अङ्ग सूत्र किनने हैं ?

उ०—शुद्ध (बारह) १२।

प्र०—उनके नाम बताओ :

उ०—आचाराङ्ग सूत्र १, मृगगहाङ्ग सूत्र २, व्यानाङ्ग सूत्र ३, नमस्त्र, पाङ्ग सूत्र ४, विव ४ प्रसमि सूत्र ५, ज्ञानार्थ-कथाङ्ग सूत्र ६, उपनिषद्-सूत्र ७, अन्तर सूत्र ८, अनुसरोपनिषद् सूत्र ९, प्रश्न व्याकरण सूत्र १०, विपाक सूत्र ११ और दृष्टिद्वय सूत्र १२।

प्र०--उपाङ्ग मूत्र कितने हैं ?

उ०--बारह १२।

प्र०--उनके नाम बताओ ?

उ०--उबवाई मूत्र १ राजप्रश्रीय मूत्र २ जीवाभिगम मूत्र
पद्मवणा मूत्र ४ जंबुद्वीप पद्मती ५ चन्द्र पद्मती
मूत्र पद्मती ७ निगवळिका ८ कल्प बर्हिमदा
पुष्पिका ९ पुष्क चुलिया ११ कण्ठी दिमा १२

प्र०--मूल मूत्र कितने हैं ?

उ०--चार ४।

प्र०--उनके नाम मुनाओ ?

उ०--दशवैकालिक मूत्र १ उत्तराध्ययन मूत्र २ नंदी मूत्र
अनुयोग द्वार मूत्र ४।

प्र०--उद् मूत्र कितने हैं ?

उ०--चार ४।

प्र०--उनके नाम भी बताओ ?

उ०--निर्गोध मूत्र १ दशाधनष्क २ मूत्र २ वृहन्नहन मूत्र
अरहा मूत्र ४

प्र०--उक्त वर्ण, म मूत्रों में ना का अभाव मूत्र का नाम नहीं
है ना क्या इस मूत्र का अभाव कितना है ?

उ०-नहीं, किन्तु आज कल वारह अंगसूत्रों में जो चारहवां दृष्टिवादाङ्ग सूत्र है वह नहीं है इसलिए आवश्यक सूत्र को मिलाकर ही ३२ सूत्र गिने जाते हैं ।

प्र०-सूत्र शब्द का मुख्य क्या अर्थ है ?

उ०-जो सूचना करे, और अक्षर स्तोक [थोड़े] तथा अर्थ बहुत हों तथा अर्थ को सीधे उसे ही सूत्र कहते हैं ।

प्र०-अनुयोग किसे कहते हैं ?

उ०-सूत्र के साथ अर्थ की योजना करनी तथा सूत्र की विस्तार पूर्वक व्याख्या उसी का नाम अनुयोग है ।

प्र०-अनुयोग कितने प्रकार से कहे गए हैं ?

उ०-चार प्रकार से ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-चरण करणानुयोग १ धर्मानुयोग २ गणितानुयोग ३ द्रव्यानुयोग ४ ।

प्र०-चरण करणानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

उ०-कालिक सूत्र, जैसे आचारागादि

प्र०-धर्मानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

उ०-कृपिभाषित आदि सूत्र, जैसे उत्तराख्ययनादि

प्र०-गणितानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

- उ०-सूर्य मङ्गल और चन्द्र मङ्गल आदि ।
- प्र०-द्रव्यानुयोग के मूत्र कौन २ से हैं ?
- उ०-जिन में एद् द्रव्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है जैसे दृष्टिवादाह मृथादि ।
- प्र०-इन मूत्रों में एकान्तवाद का वर्णन है या कि अनेकान्तवाद का कथन है ?
- उ०-इन मूत्रों में अनेकान्तवाद स्वीकार किया गया है और एकान्तवाद का खंडन किया गया है ।
- प्र०-एकान्तवाद और अनेकान्तवाद का क्या अर्थ है ?
- उ०-एकान्तवाद वस्तु को ऐसे ही मानता है और अनेकान्तवाद ऐसे भी है इस प्रकार से मानता है ।
- प्र०-इस में कोई गृहान्त दो ?
- उ०-जैसे यद्वा निम्न भी है और अनिम्न भी है पुष्ट ड्रव्य निम्न है, जो कार्य रूप यद् है वह अनिम्न है ।
- प्र०-क्या अनेकान्तवाद पुरुषों में भी लागू माना है ?
- उ०-यहाँ कोई भी बताने नहीं है जिस में अनेकान्तवाद न लागता हो. इसीलिए पुरुषों में भी अनेकान्तवाद लागू माना है ।
- प्र०- इस पर कोई गृहान्त दो ?

३०-पुरुष चार प्रकार के होते हैं जैसे कि एक मिलने में तो भद्र हैं परन्तु सदैव पास रहने से फिर भद्र नहीं हैं एक पास रहने में तो भद्र हैं किन्तु पहिले मिलने में भद्र नहीं हैं २ एक मिलने में भी भद्र और पास रहने से भी भद्र ३ एक न तो मिलने में भद्र और न पास रहने में भद्र ४ ।

४०-इन में श्रेष्ठ कौन २ से हैं ?

३०-दूसरे और तीसरे अंक के पुरुष तो अच्छे हैं किन्तु पहिले और चौथे अंक के पुरुष अच्छे नहीं हैं ।

५०-क्या सर्व पुरुष अच्छे नहीं होते हैं ?

३०-नहीं, क्योंकि पुरुष चार प्रकार के होते हैं ।

५०-वे कौन २ से हैं ?

३०-एक देखने में ऊपर से तो अच्छे होते हैं किन्तु अभ्यन्तर से कठोर हैं १ एक भीतर से सकोमल हैं परंतु ऊपर से कठिन हैं २ एक ऊपर से और भीतर से सकोमल हैं ३ एक ऊपर और भीतर से कठोर हैं ४ ।

५०-क्या फल भी चार प्रकार के होते हैं ?

३०-हाँ ।

५०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-छुहारा, चादाम, दाख, और सुपारी, इसी
ऊपर कहे हुए पुरुष भी हैं ।

प्रश्नावली ।

- १-आथर्वक सूत्र के कितने अध्याय हैं और उनके नाम क्या हैं ?
- २-बत्तीस सूत्रों के नाम बताओ ?
- ३-उपाङ्ग सूत्र कितने हैं ?
- ४-छेद सूत्र कौन २ से हैं ?
- ५-मुख सूत्रों के नाम सुनाओ ?
- ६-अनुयोग कितने हैं ?
- ७-पुरुष कितने प्रकार के होते हैं ?
- ८-अनेकान्तवाद का क्या अर्थ है ?
- ९-सूत्र शब्द का क्या अर्थ है ?
- १०-आथर्वक सूत्र का अर्थ क्या है ?

द्वितीय पाठ

बत्तीस सूत्रों के समास विषय ।

- ५०--आचाराङ्ग सूत्र में किस वस्तु का विस्तार किया गया है?
- ६०--सदाचार विषय का भली भाँति से विस्तार किया है और इसी विषय को प्रबल युक्तियों से सिद्ध किया है कि सदाचार ही पुरुषों का भूषण है इसी से ज्ञानादि की सफलता होता है इत्यादि ।
- ७०--सूयगडाङ्ग सूत्र में क्या वर्णन है ?
- ८०--'जैन धन वा अन्यधने' क निद्वन्त यद्वा युक्ति से दिग्बलाए गए हैं और युक्त पृथक् उनकी समा-लोचना भी की गई है अन्त में अनकान्त [जैन] वाद को सर्वोत्कृष्ट बनलाया गया है ।
- ९०--स्थानाङ्ग सूत्र में किस वस्तु का विस्तार किया गया है ?
- १००--एक अङ्क से लेकर दश अङ्कों पर्यन्त सब पदार्थों का वर्णन कर दिया है जैसे कि आत्मा एक है ।

और अजीब दो द्रव्य हैं। सी पुदप ननुसक
 नीनों वेद हैं चारों गतिपं हैं पांच मरात्रन है
 काय हैं सप्तस्यर अष्टवषन विमक्तिपं मयप्रपण
 की गुमिपं, दश प्रकार के सुख इस प्रकार है
 पदार्थ की युक्ति पूर्वक व्याख्या की गी है और
 इसमें सिद्धान्त और उपदेश को कूट कूट कर
 हुआ है।

- १० मयरायाङ्ग मय में क्या वर्णन है ?
- २० इसमें संख्या के क्रम में वदार्थों का वर्णन किया है
 कल में तीदङ्गो सङ्ककारिषो वा वासुदेयं
 का भी वर्णन किया गया है।
- ३० वयवर्ती चिदाह वज्रमि) मय में क्या अविहार
 माना है ?
- ४ ११ मय वज्राना ह, ज्ञान, म, ज्ञान है, मयवत्
 १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सब पढ़ने योग्य हैं पदार्थ विद्या के अनुसार
मशोत्तर हैं ।

५०-ज्ञाताधर्मकथाङ्ग मूत्र में किनर विषयों का अधिकार
है ?

६०-इस मूत्र में बड़े उत्तम शिक्षामय धर्मात्मा पुरुषों के
दृष्टान्तों द्वारा भव्य जीवों के शिक्षित बनाने की
चेष्टा की गई है, इस से यह दृष्टान्त बड़े रमणीय
युक्ति सङ्गत हर एक प्राणी के मनन करने योग्य हैं

७०-उपासक दशाङ्ग मूत्र में क्या अधिकार है ?

८०-श्रावक धर्म बड़ी उत्तम रीति से वर्णन किया गया
है इतना ही नहीं किन्तु गृहस्थों के कर्तव्य और उन
के कर्णीय कार्यों का भली प्रकार से दिग्दर्शन कराया
गया है ।

९०-अंतगड मूत्र में क्या वर्णन है ?

१० जो आन्वारं अन्न समय संक्षेप पधारे हैं उनके जीवन
चरित्र दिग्बलाण गण हैं

११-अनुत्तगोरपानिक मूत्र में किस का अधिकार किया
गया है ?

उ०-जो आत्माएँ अनुत्तरविधानों में उत्पन्न हुई हैं उनके जीवन चरित्र दिखलाए गए हैं।

प्र०-मग्न व्याकरण मूल में क्या अधिकार है ?

उ०-इस मूल में अहिंसा, झूठ, चोरी, अग्रसर्वण और परिग्रह के विषय में बड़े उत्तम व्याख्यान दिए गए हैं और उनके इहलौकिक पारलौकिक इतिहास भी दिखलाए गए हैं, साथ ही अहिंसा, सत्य, अचौर्यकर्म, व्रतचर्य और अपरिग्रह की व्याख्या बड़ी ही सुन्दर शैली से की गई है इस लिए यह मूल मन्थक विज्ञानों के पढ़ने योग्य है।

प्र०-विदाक मूल में क्या अधिकार है ?

उ०-इस मूल में कर्मों के फलों का अधिकार दिखलाया गया है और साथ ही न्याय और अन्याय का कर्म बड़ी सुन्दर शैली में वर्णन किया गया है।

प्र०-दृष्टिवाद मूल में क्या वर्णन है ?

उ०-जीवदृश्य और अजीव दृश्य की पहली व्याख्या की गई है जैसा कि इस विषय नहीं है जो इसमें वर्णन है।

२०-आत्मा किस प्रकार से और किन २ कर्मों से यो-
नियों (भवान्तर) में उत्पन्न होता है उनका और
मत्तज्ञवशात् भगवान् महावीर स्वामी और कुणिक
महाराजा की भक्ति का भी दिग्दर्शन कराया गया है
इतना ही नहीं किंतु राजनीति का भी वर्णन भली
प्रकार से किया गया है साथ ही उस समय के भारत
का रमणीय चित्र भी खींचा गया है जिससे प्रतीत
होता है कि हमारे पूर्वजों का समय कैसा
सुखमय और स्वतन्त्रता का था और कितनी कठोर
कैसी उन्नत थी । भारत के अद्भुत की मुख्य
राजधानी चंपानगरी कैसी उन्नति के चित्र पर
पहुंची हुई थी और मुनि ऋषि भी अपने कर्तव्यों
को बड़ी उत्तम शैली से पालन करते थे राजा और
प्रजा में संप और परस्पर पिता पुत्र के सम्बन्ध में
नीति अपना काम करती थी ।

२०-राजप्रश्नोपनिषद् में क्या अधिकार है ?

२०-महाराजा प्रवेश के नास्तिक मन सम्बन्धि प्रश्नों
पर है जो श्री केशरी कुमार शर्मा के माध्यम से
वे प्रश्नोत्तर विज्ञान दृष्टि से देते हैं जो उन्हें महान्

के हैं और साथ ही महा विमान सुरिभाम का वर्णन किया गया है ।

प्र०—जीवाभिगम मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—जीव और अजीव का मछी-मांति से बोध करा गया है साथ ही रुद्रों और द्रौणों का भी परि दिया है ।

प्र०—पञ्चवणा मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—इस में बड़ा ही सूक्ष्म ज्ञान का वर्णन किया गया और कर्म मकृतियों का तो बड़ा ही अद्भुत वर्णन इस का वत्ता पूर्ण तत्त्वों का वेना हो जाता है ।

प्र०—संशुद्धीय मन्त्र में क्या वर्णन है ?

उ०—संशुद्धीय का विस्तार पूर्वक वर्णन है और वह मानव मण्ड के देशों का भी वर्णन किया गया साथ ही मानव चक्रवर्ति की द्विगुविजय का भी अकार किया हुआ है इस के पढ़ने में त्रैल भूगोल का बड़ा बोध हो जाता है ।

प्र०—चन्द्रवज्राय मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—उप विषया के मुख्य इन्द्र चन्द्रमा का वर्णन है ।

इस मंत्र के पढ़ने से ज्ञान का बोध वर्णन किया गया है ।

म०-सूर्य प्रज्ञप्ति में क्या अधिकार है ?

उ०-इस में सूर्य का अधिकार है और संपूर्ण ज्योतिषियों वा ग्रहादि का विस्तार किया गया है यह दोनों मूत्र खगोल विद्या के गिने जाते हैं इस में आकाश सम्बन्धि चमत्कारों का बड़ा ही अद्भुत वर्णन किया गया है जो इन को पढ़ते हैं वे दैवज्ञ कहे जाते हैं प्रसंगवशात् फलादेश वा गणित विद्या के तो यह दोनों मुख्य शास्त्र हैं ।

म०-निरावलिका मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-महाराजा कुणिक के महासंग्राम का वर्णन किया गया है जिस में कालिकुमारादि दशों भाई काम आए हैं, संग्राम नीति और उम का परिणाम इस मूत्र में दिखलाया गया है जो आन्माणं कल्प देव-लोकों में उत्पन्न हुए हैं उन की व्याख्या की गई है

म०-पुष्पिया चूलिया मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-इस में भी देवलोक में गए हुए जीवों का वर्णन है श्री देवी आदि देवियों का विस्तार पृथक् कथन किया गया है ।

म०-पुष्पिया मूत्र में क्या वर्णन है ?

३०-शुक आदि ग्रहों की उत्पत्ति का वर्णन और उनमें पिछले जन्म का भी दिग्दर्शन कराया गया है।

५०-वशिष्टादिमा मूत्र में क्या वर्णन है ?

३०-इस मूत्र में पल्लदेव के पुत्रों का वर्णन किया गया है जो श्री अरिष्टनेमि भगवान् के पास दीक्षित होकर देवलोकों में गए हैं।

५०-नर्गीय मूत्र में किस विषय के अधिकार का क्या किया गया है ?

३०-ज्ञान दर्शन और चारित्र्य में जो दोष छगते हैं वे उनकी शुद्धि के लिए विस्तार पूर्वक मायथित की विद्या का विधान किया है और वह विधि सदैव का उपाय है युक्ति संगत और आत्म दमन का मूल उपाय है यह मूत्र नेताओं को कंडस्य रत्नने योग्य

५०-दशाशुत सहस्र मूत्र में क्या विषय है ?

३०-इस में समय लोक विभाषण (गुणानन्द) विद्या का वर्णन किया गया है जो अनेक मार्गों के कंडस्य रत्नने योग्य है अनेक मार्गों के वर्णन इस मूत्र में है।

५०-इस मूत्र में क्या वर्णन है ?

०-साधु साध्वी के पूर्ण आचार का वर्णन इस मूत्र में दिखलाया गया है ।

०-स्ववहार मूत्र में क्या अधिकार है ?

०-साधु की क्रियाओंका विस्तार पूर्वक कथन किया गया है और साथ ही आचार्य, उपाध्याय, गणित, गणा-
इन्द्रेन्द्रक, भवर्चक, स्थविर आदि पदवियों का वर्णन
और इन के कर्तव्य भी दिखलाए गए हैं. आर्यापों
का भी विस्तार पूर्वक कथन किया गया है, शास्त्रा-
भ्यसन विधि वा तप विधि का भी दिग्दर्शन करा
दिया है पर मूत्र भी मुख्य न नेताओं के कष्टस्थ
करने योग्य है ।

०-दूरकालिक मूत्र में क्या वर्णन है ?

०-नयन धेनि के नर दीक्षित मुनि का आचार एही
योग्यता के साथ वर्णन किया है निम्न वर्णों को
किन विधि में पालन करना चाहिए इन विषय में
उपदेश विस्तार पूर्वक दिखलाया हुआ है. यद्यपि
यह मूत्र आज कल मयब में ही का जिनका जन्म है
किन्तु इस में शिक्षा एवं व्यवहार का ही है।
इस का पत्र कर्तव्य मुनि का नर दीक्षित का नाम
०-१९

प्र०-उत्तराध्ययन सूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-इस सूत्र में, जैन सिद्धान्त, उपदेश और विचार यह तीनों विषय दिखाए गए हैं ऐसा कोई विषय शेष नहीं रहा जो इस सूत्र में सूत्र का न कथन किया हो और श्लोक [योद्धे] वर्णन का अर्थ इसमें प्रतिपादन किया हुआ है यह सूत्र के माणी के कण्ठस्थ करने योग्य है इसके ऊपर के आचार्यों ने संस्कृत टीकाएं लिखी हैं जो पाठ तो सुप्रसिद्ध हैं किन्तु सुनने में ३६ टीकाएं प्राची

प्र०-नन्दी सूत्र में क्या अधिकार है ?

उ०-पानि ज्ञान, भूत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यव और केवल ज्ञान, इन पांचों ज्ञानों का वि पूर्वक कथन किया हुआ है अनेक उदाहरणों इन की भिद्धि की गई है यह जैन न्याय सूत्र नाम में सुप्रसिद्ध है ।

प्र०-अनुयागशास्त्र सूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-अनुयाग शास्त्र सूत्र में जैन न्याय के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन किया गया है। न्याय विषय, न्याय

तृतीय पाठ

त्रस और स्थावर विषय ।

- प्र०—त्रस कितने प्रकार से वर्णन किए गए हैं ?
 उ०—चार प्रकार से ।
 प्र०—वे कौन २ से हैं ?
 उ०—दो इन्द्रिय वाले जीव १, तीन इन्द्रिय वाले जीव २, चार इन्द्रिय वाले जीव ३, और पांच इन्द्रिय वाले जीव ४ ।
 प्र० पांच इन्द्रियों वाले जीव कौनसे हैं ?
 उ०—नारकीय, पशु, मनुष्य और देव ।
 प्र०—नारकीय जीव कहां पर हैं ?
 उ०—इस पृथ्वी के नीचे सात नरकों हैं उनमें जं रहते हैं वे नारकीय हैं और बड़े ही दुःखी ।
 प्र०—नरकों में कौन जाने हैं ?
 उ०—पाप कर्म करनेवाले (बुरा काम करने वाले

प्र०-पाँच इन्द्रिय वाले पशु कितने प्रकार से वर्णन किए गए हैं, और वे कौन २ से हैं ?

उ०-तीन प्रकार से, जैसे जलचर-मत्स्यादि, स्थलचर-गोआदि, खेचर-क्यूतर आदि पक्षी ।

प्र०-मनुष्य कितने प्रकार से कटे गए हैं ?

उ०-दो प्रकार से, जैसे कि आर्य और अनार्य ।

प्र०-आर्य किसे कहते हैं ?

उ०-जो धृष्ट, विद्वान् और दयालु मनुष्य हो ।

प्र०-अनार्य किसे कहते हैं ?

उ०-जो दया भे रहित हो, (निर्दयी) ।

प्र०-देह कितने प्रकार के हैं ?

उ०-चार प्रकार के ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-महान पति, बानरएन्तर, उपातिपी, और वैशानिक ।

प्र०-व्याधर जीव कितने प्रकार के हैं ?

उ०-पाँच प्रकार के ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-विहीन ३ व, पाली ३ व, अरु ३ व, अरु ३ व, अरु ३ व

के अरु और इन्तर ३ व अरु

प्र०-मिट्टी में, पानी में, अग्नि में, वायु में, कितने जीव हैं ?

उ०-असंख्यात [जो गणना में न आ सकें]

प्र०-वनस्पति में कितने जीव हैं ?

उ०-अनन्त ।

प्र०-वे जीव कौन से हैं जो न तो ब्रह्म हैं और न स्थाव

उ०-मोक्ष आत्मा, सिद्ध भगवान् ।

प्र०-उन के क्या क्या नाम हैं ?

उ०-अजर, अमर, सिद्ध, शुद्ध, परमेश्वर, परमात्मा, ईश्वर, सर्वज्ञ इत्यादि अनन्त नाम हैं ।

प्र०-अजर, अमर आदि के नाम जपने से हम को क्या लाभ होता है ?

उ०-चित्त को शान्ति आती है भाव शुद्ध हो जाता है जैसे अग्नि के पास बैठने में शीत दूर हो जाता है वैसे ही भगवान् के जप में पाप (दुःख) दूर हो जाने हैं ।



प्रश्नावली ।

- १ वस्तु कितने प्रकार के हैं ।
 - २ स्यादर कितने प्रकार के हैं ।
 - ३ वस्तु जीवों के नाम बताओ ।
 - ४ स्यादरों के नाम बताओ ।
 - ५ अनायं कितने कहते हैं ।
 - ६ अनायं कितने कहते हैं ।
 - ७ मोक्ष आत्माओं के क्या २ नाम हैं ।
 - ८ उन के जाप से हम को क्या लाभ होता है ।
-

चतुर्थ पाठ

पच्चीस बोल के थोकड़े के ११वें बोल
से लेकर १३वें बोल तक ।

म०-गुण स्थान किसे कहते हैं ?

उ०-मोह और योग के निमित्त से सम्यग् दर्शन सम्पूर्ण
ज्ञान और सम्यग् चारित्र्य रूप आत्मा के गुणों की
तारतम्य रूप अवस्था विशेष को गुण स्थान कहते हैं ।

म०-गुणस्थान कितने हैं ?

उ०-चौदह १४ ।

म०-उन के नाम क्या २ हैं ?

उ०-१ मिथ्यात्व, २ सासादन (साखादन), ३ मिथ, ४
अविरत सम्यक् दृष्टि, ५ देशविरत (देशव्रती)
६ ममतविरत, (ममादी), ७ अममतविरत, (अम-
मादी), ८ अपूर्व करण, ९ (निवर्तिवादर) अनि-
वर्तिवादर (अनिर्दृष्टिकरण), १० मूर्ख सम्प्राप, ११
उपशान्तमोहनीय, १२ क्षीणमोहनीय, १३
संयोगी, १४ अयोगी ।

प्र०—पाँचों इन्द्रियों के विषय कितने हैं ?

उ०—नेवीस २३ ।

प्र०—श्रुतेन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—तीन ।

प्र०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—जीवशब्द १, अजीव शब्द २, और मिश्र शब्द ३

प्र०—बहुसिन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—पाँच ।

प्र०—उनके नाम बताओ ?

उ०—बाला, नीला, पीला, लाल, सफ़ेद रण ।

प्र०—घ्राणेन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—दो ।

प्र०—उनके नाम बताओ ?

उ०—सुगन्ध और दुर्गन्ध ।

प्र०—स्नेहेन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—तीन ।

प्र०—वे कौन ३ से हैं ?

उ०—जल, अम्ल, कड़वा, मीठा, खट्टा, रस

प्र०—वे कौन ३ से हैं ?

६०-१२ धर्म मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो धर्म को अधर्म समझता होवे जैसे आँदिसा सत्य, अदत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, रूप धर्मों को अधर्म मानना ।

६०-१३ अधर्म मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-अनार्य धर्मों को धर्म मानना जैसे, जीव हिंसादि धर्मों को धर्म कहना ।

६०-१४ नापु मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो गुणों में अलंकृत हैं और ठीक नापु इति को साक्ष्य वाले हैं जनों को अनापु मानना ।

६०-१५ अनापु मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो हिंसक, दुराचारी, पशुभित्तारी पुरुष हैं और अचार्य पापों के भेदन करने वाले हैं जनों को नापु मानना वही अनापु मिथ्यात्व होता है ।

६०-१६ और मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-अन्य धर्मों को जो धर्म के समान मानना वही मिथ्यात्व है ।

६०-१७ अधर्म मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

2

1

10-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

10-जिनेश्वर देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।

10-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

10-गुरुकी ३३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ असभ्य व्यवहार करना ।

10-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

10-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

10-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

10-जिससे सत्य वस्तु का बोध होजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता को ही श्रेष्ठ मानना, अपितु, जो ज्ञान साधन के उपाय हैं । उनका मूलाच्छेदन करना और जो अज्ञान के नाश करने के साधन हैं उनके रक्षा के

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मानना, जैसे-सुका काष्ठ वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा धारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चास्त्र और शुद्ध निर्दोष, तप, दया, दान, संतोष क्षमा आदि के मार्ग को बंधन का मार्ग बतलाना और दया दान का निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, उस को मोक्षका मार्ग बतलाना, तथा काम क्रीडादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान् पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शमान होने से उसी को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना जैसे-आत्मा, आकाश, अमोदि पदार्थों को रूपी कह

- ०-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?
- ०-जिनेश्वर देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।
- ०-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?
- ०-गुरुकी ३३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ असभ्य व्यवहार करना ।
- ०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?
- ०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।
- ०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?
- ०-जिससे सत्य वस्तु का बोध होजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता को ही श्रेष्ठ मानना, अपितु, जो ज्ञान साधन के उपाय हैं । उनका मूलोच्छेदन करना और जो अज्ञान के नाश करने के साधन हैं उनके रक्षा के

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मानना, जैसे-सुका काष्ठ वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा धारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य और शुद्ध निर्दोष, तप, दया, दान, संतोष, क्षमा आदि के मार्ग को धंधन का मार्ग पनझारे और दया दानका निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, उसी को मोक्षका मार्ग घतलाना, तथा काम क्रीड़ादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शवान होने से उसी को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना । जैसे-आत्मा, आकाश, यमोदि पदार्थों को रूपी कहना

१०-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

३०-जिनेश्वर-देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।

१०-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

३०-गुरुकी ३३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ अमभ्य व्यवहार करना ।

१०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

३०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

१०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

३०-जिनमें मन्थ वस्तु का बोध हो जावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता को ही श्रेष्ठ मानना, अपितु ज्ञान साधन के उपाय हैं उनके मूल-संयम करना और ज्ञान अज्ञान के नाश करने के साधन हैं उनके मूल-संयम

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मानना, जैसे-सुका काष्ठ, वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा धारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य और शुद्ध निर्दोष, तप, दया, दान, समा आदि के मार्ग को बंधन का मार्ग बतलाने और दया दानका निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, उसी को मोक्षका मार्ग बतलाना, तथा काम क्रीड़ादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान् पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शमान होने से उन्ही को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना । जैसे-आत्मा, आकाश, वगैरि पदार्थों को रूपी कहना

१०-२२ आविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-निन्दित देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का आविनय करना वही आविनय मिथ्यात्व होता है ।

१०-२३ आघातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-गुरुकी ३३ आघातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ अनभ्य व्यवहार करना ।

१०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

१०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-निम्ने सत्य वस्तु का वांछ हांजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता का ही श्रेष्ठ मानना, अर्थात् न ज्ञान नाशक क उपाय है । अज्ञान वस्तु का ज्ञान हांजावे और न अज्ञान के नश कराने के उपाय । ३-६ १५ ६

प्र०-दो इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-उनके भी नाम बतलाओ ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-तीन इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-चार इन्द्रिय वाले जीवों के दो भेद कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-पांच इन्द्रियों वाले जीवों के चार भेद कौन २ से हैं ?

उ०-संज्ञि १, असंज्ञि २, अपर्याप्त ३, और पर्याप्त ४ ।

प्र०-पर्याप्त अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ०-आद्यागति जिस के पूर्ण हो गये हैं: उसे ही पर्याप्त

कहते हैं: अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु का नाम पर्याप्त है

और अपूर्ण का नाम अपर्याप्त है ।

प्र०-संज्ञि और असंज्ञि किसे कहते हैं ?

उ०-जो मन वाले जीव हैं, उनको संज्ञि कहते हैं, जिन

के मन नहीं हैं, उनको असंज्ञि कहते हैं पांच स्थावर

उ०-दो ।

प्र०-वे कौन २ से है ?

उ०-गूक्ष्म और वादर (स्थूल) ।

प्र०-गूक्ष्म जीव किसे कहते हैं ?

उ०-गूक्ष्म नाम कर्म के उदय से जो गूक्ष्म शरीर का जीव है, उन्हें ही गूक्ष्म कहते हैं; वे आत्मारंभ लोक में व्याप्त हैं अपनी आयु के आने पर ही होते हैं, केवल ज्ञानी उन को देखते हैं ।

प्र०-वादर जीव किसे कहते हैं ?

उ०-जैसे पांच व्याधय वादर नाम कर्म के उदय में शरीर के घटने वाले हैं, दृष्टिगोचर होते हैं, वे वा सुख के अनुभव करते हुए भी देखे जाते हैं, व्यवहार तब के मारे मर जाते हैं, अनुरक्त प्रतिहृल भी हो जाते हैं अपने कर्मोदय से मरने में अग्रणी करते हैं ।

प्र०-कर्मोदय के चिह्न किसे कहते हैं ?

उ०-वा

प्र०-कर्मोदय के चिह्न किसे कहते हैं ?

उ०-वा

प्र०-दो इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-उनके भी नाम बतलाओ ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-तीन इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-चार इन्द्रिय वाले जीवों के दो भेद कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-पांच इन्द्रियों वाले जीवों के चार भेद कौन २ से हैं ?

उ०-संज्ञि १, असंज्ञि २, अपर्याप्त ३, और पर्याप्त ४ ।

प्र०-पर्याप्त अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ०-आहारादि जिस के पूर्ण हो गये हैं; उसे ही पर्याप्त कहते हैं; अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु का नाम पर्याप्त है और अपूर्ण का नाम अपर्याप्त है ।

प्र०-संज्ञि और असंज्ञि किसे कहते हैं ?

उ०-जो मन वाञ्छे जीव है, उनको संज्ञि कहते हैं, जिन के मन नहीं है, उनको असंज्ञि कहते हैं पांच न्याय





छठा पाठ ।

गृहस्थ के गुण विषय ।

चारों आश्रमों का कारण भूत एक गृहस्थाश्रम है। गृहस्थाश्रम की शुद्धि के होने पर ही शेष आश्रम सुद हो सकते हैं । गृहस्थाश्रम-रूपी गाड़ी के चलाने वाले स्त्री और पुरुष यह दोनों दृष्य (बैठ) हैं, जब वे सुयोग्य होते हैं, तब पथिक इच्छानुकूल मार्ग पर शीघ्र पहुँच जाता है तथा गाड़ी में बैठने वाले आनन्द पूर्वक अपने नियत स्थान पर पहुँच कर सुख का अनुभव करते हैं । अतएव सिद्ध हुआ कि गृहस्थाश्रम में बसने वाले स्त्री और पुरुष सुयोग्य होने चाहिए क्योंकि शिक्षित और अशिक्षित का अन्तर अत्र इयमेव होता है, जैसे काठ काठ का अन्तर होता है।

गुण का अन्तर अवश्य है, उसी प्रकार स्त्री वा पुरुष का अन्तर है । एक पुरुष वा स्त्री गुणज्ञ, परोपकारी, सत्यवादी, प्रामाण्यकारी, न्याय करने वाले होते हैं । एक अन्यायी, धर्मविचारी होते हैं तो उन्हीं का संसार में प्रसिद्धि आदि गुणों में अवश्यमेव अन्तर पड़ जाता है, जो पदार्थ संसार में अल्प मूल्य वाला होता है, यदि उस को भी शिक्षाओं द्वारा ठीक किया जाए तो वह भी बहु मूल्य हो जाता है ।

जैसे एक तो बर छोटा है जो अभी आकर (मानव जन्म) में नियोजन है और वह भी छोटा ही है, जिस को अग्रिम में लाल कर लम्बे बनाये गए हैं और एक बड़ा बड़ा भी है जो आर्य आदि नवोदय न्यायों के लोभ करने में आते हैं, अब देखिए इन दोनों में बितना बड़ी भिन्नता है । इसी प्रकार शिक्षा और अज्ञान का अन्तर होता है । जो जो बड़े बड़े पुरुष ज्ञानार्थक में शिक्षित होकर बड़े होते हैं - वे जो ज्ञानार्थक में अज्ञान होकर बड़े हुए

विद्युत् ३० बल्लार से रहित, ३१ अपने लान
 में लान (उत्तर) का विचार करने वाला, ३२
 लान में शक्ति उत्पन्न करने वाला। इन बचीस गुणों
 का शरीर सुस्थायन योग्य होने से फिर धर्म के
 ही योग्य हो जाता है।

इसलिए सर्व प्राणियों को इन गुणों के धारण
 करने ही आवश्यकता है, इनमें ही परीक्षा की श्रेणि
 में ही बल्लार हो जाता है और सर्वत्र जहाँ इन
 विचारों की अन्तर्गत दृष्टि कर देना चाहिए जिस
 विचार में प्राणी अपने गुणों का नाश कर बैठता
 है उस लोक में निम्ना परलोक में दुःख भोगता
 है। प्राणी है "इच्छा" गुणों की इच्छा करने में अन्त-
 र्गत गुणों का नाश इत्यादि अब गुणों की प्राप्ति होती
 है इसलिए किसी में भी इच्छा बन हने निम्ना बन हने
 किसी का भी निन्दन बन हने अस्तित्व होनेके लो-
 कोंके गुणान्तर ३ हों। इन के मन्त्र और शक्ति की
 उपरान्त दिग्दर्श ५ अब कि तुम इन के गुण हवन
 करोगे तब वा भी तुम्हारे माय मन्त्र बर्दाश्त होंगे
 जिस से मन की परान्त अन्तर्गत हृदि होगी।

क्योंकि वहाँ पर शान्ति का राज्य है वहाँ पर क्रोध
 ही आने करने आम बुद्ध (ज्ञान्त) जाती है, अपितु
 वहाँ करने वाले को लज्जित होना पड़ता है । जैसेकि-
 सिमी नगर के शक्ति एक भिक्षु ठहरा हुआ था, उन
 ही शान्ति ही सिमी नगर में बहुत ही फैल गई तैकड़ों
 न नगियों के समूह उन के दर्शनो को आते थे और
 उन में वचन व शिक्षा प्राप्त करते थे, फिर उन का
 परीक्षण करते हुए अपने व पणों में बड़े जाते थे । एक
 दिन ही शक्ति है कि सिमी पुरष ने विचार किया कि
 कि शान्ति ही शान्ति ही सीमा कां नष्ट है, इसलिए
 उन ही सीमा करने चाहिए, पर उन पुरष ने उन
 सिमी के पास आकर साक्षिणे और पुरषिय होने
 कारण का फिर सिमी शान्ति में उन का हृदय भी
 बहुरूप नगि सिमी पर पर पुरष अपने आर नगि ही
 नगि, पर नगि पर ही नगि पर नगि नगि के लगे
 हृदय कि नगि पर नगि अदरी इत्यादि ही नगि नगि
 सिमी के नगि पर नगि नगि नगि नगि नगि नगि
 नगि नगि

नष्ट नहीं होता है और अपनी परम मित्रता का
 बंधन रहता है । क्योंकि छल करने वाले के
 संबंधों में विश्वास नहीं करता, यदि किसी को
 धोखा देने को दूर भी दृष्ट जाती है ।

इसी दुष्प्रसंग में शोभा नहीं पाते हैं अपितु
 किंवा शोभा नहीं है क्योंकि जिस ने छल किया होता
 है वह उसका दुश्मन रहता है और उन के मुख में
 शोभा नहीं निकलती है किन्तु उसका आत्मा
 भी उसे छिद्र देखता रहता है इस लिए कण्ट (काठ)
 को भी उल्टा हो जाँदना चाहिए किन्ती के साथ भी
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना न हो क्या दृष्ट भी
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना कण्ट की शोभा दूर
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना कण्ट की शोभा दूर
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना कण्ट की शोभा दूर
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना कण्ट की शोभा दूर
 कण्ट के शोभा दूर नहीं जाँदना कण्ट की शोभा दूर

आठवां पाठ ।

दया विषय ।

पूरे काळ में इमी भारत वर्ष में एक जगहा के बाडी नगरी बननी थी, जम में अनेक पनी संगी निवास वा और जम नगरी में एक बनवाडा प्राण का भी हुआ था ।

अतितु एक प्राण्य के तीन पुत्र थे, और उन तीन बच्चों में आई हुई थीं, एक समय उन तीनों मातृओं ने अपना रमोई घर (महानमशाळा) की बच्चों को संवाह दिया, और उनही रमोई घर की बारी बांधी एक दिन मध में बड़ी बहू की बारी आनी हमदा नाव वा नागधी समय में रमोई का काव करना प्रारम्भ कर दिया मर उन काह के बचान के जग कइए दुखा गोबलिवा जग बनद मरवा के अन्त में बचाव की राह दि पुराने व की बन्दुत का रना मर जगन मर



श्रीवीतरागायनमः ।

जैन धर्म शिक्षावली ।

चतुर्थ भाग ।

जैनमुनि उपाध्याय आत्मारामजी



दूसरा पाठ ।

थोकड़े का विषय ।

-दण्डक कितने कहते हैं ?

-जित्त में जीव दण्ड पाए, अर्थात् सुख वा दुःख का अनुभव करे ।

-दण्डक सारे कितने हैं ।

-चौबीस २४ ।

-उन के नाम क्या २ हैं ?

-सानों नरकों का एक दण्डक, दश भवनपतियों के दश दण्डक, पांच स्यावरों के पांच दण्डक । तीन विक्रमेन्द्रियों के तीन दण्डक । निर्णय पंचेन्द्रिय का एक दण्डक । पतुप्य का एक दण्डक । च्यन्तर का एक दण्डक । ज्योतिषी देवों का एक दण्डक । वैमानिक देवों का एक दण्डक । एवं सब चौबीस दण्डक हुए ।

-दश भवनपतियों के नाम क्या २ हैं ?





- १०-सक्रिय द्रव्य कितने हैं और अक्रिय द्रव्य कितने हैं ?
- ११-निक्षेप में ६ द्रव्य सक्रिय हैं, अपने २ कार्य करते हैं परन्तु जल और पृथ्वी सक्रिय हैं शेष चारों अक्रिय हैं ।
- १२-कर्त्ता और अकर्त्ता कौन २ से द्रव्य हैं ।
- १३-निक्षेप में ६ द्रव्य अपने २ स्वरूप के कर्त्ता हैं, परन्तु जल और पृथ्वी कर्त्ता हैं शेष पांच अकर्त्ता हैं ।
- १४-किस प्रकार जीव विभे करते हैं ?
- १५-जो जल में मत्स्यादि रहते हैं ।
- १६-किस प्रकार जीव विभे करते हैं ?
- १७-जो भूमि पर मनु आदि फिरते हैं ।
- १८-जो अंतरिक्ष विभे करते हैं ?
- १९-जो आकाश में पक्षी पृथ्वी हैं ।
- २०-जो जल में मनु आदि फिरते हैं ।
- २१-जो अंतरिक्ष विभे करते हैं ?
- २२-जो आकाश में पक्षी पृथ्वी हैं ।

तीसरा पाठ ।

श्रावक के पांच अनुव्रत ।

मित्र भद्र पुरुषो ! जैसे हर एक प्राणी को अपने जीवन की इच्छा रहती है, उसी तरह जीवन को बच बनाने की भी इच्छा प्रत्येक प्राणी को होनी चाहिये । तब तुम्हारा जीवन पवित्र हो जाएगा, तब हर एक के लिये तुम आदर्श बन जाओगे और तुम्हारा आचरण ठीक हो जाने पर तुम्हारी भारी संतान अच्छे मार्ग पर आजायगी और तुम संसार में यश के पात्र बनोगे । हर एक के हृदय में तुम्हारा विश्वास पैदा होगा । अपितु जब तक तुम्हारा आचरण ठीक न होगा, तब तक तुम अपने स्वयं बंधों की भी शिक्षा कभी समर्थ न होगे, इतना ही नहीं, किन्तु तुम स्वयं कष्टों का सामना करना पड़ेगा, फिर तुम

राज्य कर गए हैं । किन्तु यः वैसी की वैसी
 रही, इसके लिए अनेक राजाओं के युद्ध भी हुए,
 अनेकों के प्राण भी गए, अपितु भूमि यहाँ पर ही
 छाड़ गए, इस लिए गृहस्थ को भूमि के लिए भी झूठ
 न बोलना चाहिए ।

न्यायापहार भी न करना चाहिए, यदि किसी ने
 तुम्हारे पास विना साक्षी वा विना लिखित किए
 कोई वस्तु रख दी हो तो उस के माँगने पर ऐसा
 मत कहो कि, मेरे पास तो वस्तु रखी ही नहीं तुम
 तो मुझे कलंकित करते हो, इस प्रकार से न कहना
 चाहिए ।

झूठी साक्षी भी न देनी चाहिए. जो झूठी साक्षी देते
 हैं वे शूचीर पुरुष नहीं होते औरों के बित्त को भी
 दुःखी करते हैं. धर्म ने गिर जाते हैं, शत्रुओं में झूठी
 साक्षी देने का बड़ा पाप माना गया है, इस लिए किसी
 को भी झूठी साक्षी न देनी चाहिए ।

साथ ही इस नियम के पाच अनिचार बतलाए गए
 हैं. उन को अरःशमेव छाड देना चाहिए वरोंके

उन के त्याग देने से ही सत्यव्रत रह सकता है। नहीं तो सत्यव्रत कलंकित हो जाएगा।

वह दोष यह है जैसे कि:—

- १—बिना विचार वा निर्णय किए किसी को ऐसा न कहना चाहिए कि इसने अशुभ कार्य किया है क्योंकि यह अभ्याख्यान पाप हो जाता है, जिसने काम न किया हो यदि उस को मूढा कलंक दिया जाए तब उस का आत्मा परम दुःखी हो जाता है इस लिए बिना सोचे मन मापण करो।
- २—किसी की गुप्त बातों मगट भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि-मर्मे युक्त बातों के मगट करने से उस का मरण हो जाता है या वह कोई और ही अकार्य कर बैठता है इस वास्ते किसी बातों को जो ममिद् नहीं है उस को ममिद् न करना चाहिए, तथा जो कापचेष्टा के उत्पन्न करने वाली बातें हैं उन्हें भी मगट न करना चाहिए ना ही परस्पर उपहास्य में यह बातें करना चाहिए।
- ३—अपनी स्त्री की मर्मे युक्त बातों भी न करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर अपना ही उपहास्य होता है-



३--जब राज्य न्याय पूर्वक चला आ रहा है, और राजा न्यायशील है, जिनके मतानुसार में मित्र और शत्रु की एक घाट पानी पीते हैं। फिर जब राजा के निकट काम करना यह बड़ा भारी पाप है। इसलिए राज्य निकट काम न करना चाहिए।

४--बोला भावा अनुनायिक (कम उपादा) न काम चाहिए। ऐसा करने से मनीष नहीं रहने में अर्थात् की वृद्धि भी इन कर्मों में नहीं हो सकती, बल्कि हिंसा का वेगी क्रियाओं के करने में बलवान् नहीं हैं, अर्थात् की मानि हा भी गई हो। किन्तु जब की बनी हुई अर्थात् मुख्य देव वाली कर्मा भी नहीं होती, वेनों विद्वेषी अंगों न जो व्यापार में उन्नत मान्य है, उस का मुख्य मुख्य कारण नहीं है कि वह अंतः प्रवृत्तियों में मान्य से राजा बन है। इस विधि व्यापार में अनुनायिक न काम न करे।

५--बहु मन्त्र बन्धु म अन्तः प्रवृत्तियों में न करे। इस विधि व्यापार में अनुनायिक न काम न करे।

शान्तात्मा जगत् के उद्धार करने वाले ही होते हैं ।

प्र०—क्या सिद्ध भगवन्तों का स्वल्प भीवन्मुक्त भा-
त्याओं ने ही बनलाया है ?

उ०—हाँ, अतएव, अपर भात्याओं का स्वल्प भीवन्मुक्त
भात्याओं ने ही प्रतिपादन किया है ।

प्र०—भला यह तो बनलाओ जीवन्मुक्त किम प्रकार से
बन सकता है ?

उ०—जब अत्या सम्पूर्ण दर्शन सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण
चाञ्चल्य से युक्त होता है, तब तब के क्रोध, मान, पाप
और लोभ का दोष नष्ट होजाते हैं, फिर राग द्वेष
काम क्रोध आदि तनुओं के नष्ट होने से सर्वत्र
और सर्व दशाँ बन जाता है. सो तभी जीव को
किम जीवन्मुक्त करते हैं ।

प्र०—क्या जीवन्मुक्त भात्याएँ उदर भी करती हैं ?

उ०—हाँ, जीवन्मुक्त भात्या उदर भी करती हैं ।

प्र०—यह उदर किम लिए करती हैं ?

उ०—यह उदर बहुत बलावहार के लिए ही करती हैं,
क्योंकि अत्याओं का मुख्य तब बलावहार करना
है. सो बलावहार नहिं करतीं यह अत्या सर्व से

गिर जाती है।

प्र०-चतलाओ, जो योगी आत्मा ध्यान में ही सदा रहते हैं, वह क्या परोपकार करते हैं: क्योंकि वह तो चोछते भी नहीं हैं ?

उ०-योगी आत्मा ने जो योग मुद्रा को धारण किया है और अपने मन पर विजय पा लिया है, जब कोई उन की योग-मुद्रा को देखता है वा विचार करता है. तब उस के भावों में ज्ञान और वैराग्य की उत्पत्ति होने लगती है, फिर वह उन का यथा शक्ति अनुकरण करने लग जाता है, वह सब उन योगियों का ही उपकार है, इसलिए सदाचारी पुरुषों का मटाचार आदर्श-रूप होकर उपकार करता है. वह योगीजन अपनी योग मुद्रा से ही उपकार का मकाने है।

३०-जब राजपुरुषों को चोरी आदि कर्म मालूम हो जाएंगे तब ही उस को पकड़ेंगे, यदि मालूम न हो तो नहीं पकड़ते ।

४०-निमित्त जड़ हैं, वा चेतन ?

३०-जड़ भी और चेतन भी ।

५०-यह कैसे ?

३०-चोरी आदि कर्म तो जड़ निमित्त हैं पुरुषार्थ चोरी करने का और राज पुरुष द्वारा पकड़ने के पुरुषार्थ चेतन निमित्त हैं, इन्हीं द्वारा जीव कर्मों के फल को भोगता है ।

५०-जीव कितने प्रकार के निमित्तों को बांधते हैं, जिन में वह कर्मों के फलों को भोगते हैं ?

३०-जीव चार प्रकार के निमित्तों को बांधते हैं, जैसे कि देवताओं का, मनुष्यों का, पशुओं का, और अपने आत्माओं का ।

५०-अपने आत्मा का निमित्त कैसे होता है ?

३०-जिस में किसी देव-मनुष्य और पशु का निमित्त न होवे वही अपने आत्मा का निमित्त कहाता है ।

८-इसमें प्रमाण क्या है ?

२०-द्रव्य और पर्याय का क्या लक्षण है ?

३०-द्रव्य उसी को कहते हैं, जो अपने पर्याय को प्राप्त होता रहे जैसे पुद्गल द्रव्य तो एक है, किन्तु इसके पर्याय अनेक उत्पन्न हो रहे हैं शुभ पुद्गल में अशुभ बन जाता है अंशुभ से शुभ बनता है, जैसे भोजन से शरीर के रसादि बनते हैं ।

२०-जगत् के पर्याय का कर्त्ता कौन है ?

३०-जड़ और चेतन ।

२०-कर्म कौन करता है ?

३०-कर्म आत्मा मन वचन और काया के द्वारा ही करता है, किन्तु कर्मों के मुख्य कर्त्ता राग द्वेष हैं जब आत्मा में राग और द्वेष का आवेग होता है वही समय जीव के कर्म बन्ध का होता है ।

२०-क्या ईश्वर कर्म नहीं कराता है ?

३०-यदि ईश्वर कर्म कराता तो इसमें दोष उत्पन्न होते, जैसे एक तो जब ईश्वर कर्म कराता है जीव की कर्म करने विषय स्वतन्त्रता नष्ट हुई, दूसरे जब ईश्वर कर्म कराता है, तब भोगने वाला भी वही होना चाहिए जैसे किनी ने स्वहृत् से किनी का गन्ना

शिक्षाएँ ।

- १—अपने हित और अहित का ध्यान रखो ।
- २—जिस को बुढ़ा समझने हो उस से बचना चाहिए ।
- ३—प्राण जाने हो तो जाने दो परन्तु धर्म न जाए ।
- ४—शुभ कर्म करने में झालनी मत यतो ।
- ५—अपने किए हुए उपकार को भूल जाना चाहिए ।
- ६—धर्म पुस्तकों को पढ़ते रहो ।
- ७—मदी मसानी बातों आदि की पूजा न करनी चाहिए ।
- ८—कुत्ते दिव्वा आदि को बचाए रोटी के लाठी न मारो ।
- ९—मूर्ति को मूर्ति समझा परन्तु उस को मत्प्रा न टेको ।
- १०—अपने वृद्धों के आचरण किए हुए शुभ मार्ग पर चलो ।
- ११—जानने वाली बात को अवश्य जानो ।
- १२—छोड़ने वाली बात को छोड़ दो ।
- १३—अज्ञेय करने वाली बात को अज्ञेयकार [प्रहण] करो ।
- १४—अपने आप का भी ध्यान रखो ।
- १५—विपदा में वा सर्व प्रकार के नष्टों से बचो ।

